

पद्धतिः पुण्यकर्मणाम् Spr. (II) 4083. श्रीश्रियो सुच. 1,114,16. श्रियो
Schönheit und Wohlfahrt Naish. 3,36. pl.: पुनर्विश्वा अधि श्रियः RV. 1,
139,3. 8,91,9. अनीकेष्वधि श्रियः 20,12,28,5. 81,20,1,83,2. 166,10,2,
1,12,3,38,4. 44,2. सः Spr. (II) 3818. सर्वतु Bhāg. P. 3,15,16,5,24,10. यौ-
वन Spr. (II) 6419. am Ende eines adj. comp. Kumāras. 2,2. Naish. 22,45.
Kathās. 18,353. Dhūrtas. 69,9. H. 59. Bhāg. P. 1,11,13. 20,3,18,2. 23,50,4,
6,21. — dat. श्रियै und श्रियै (vgl. श्रियते) in adv. Weise schön, hübsch;
lieblich, gefällig: श्रिये कन्दो न स्मरते विभाती RV. 1,92,6. अधि श्रिये
डुकिता सूर्यस्य रथं तस्थौ prangend 6,63,5. उडु श्रिय उषसो रोचमाना
अस्थुः schön leuchtend 64,1. 7,67,2. श्रिये हरिवान्द्ये कस्तूरिर्वज्रम्
wohlgefällig 1,81,4. श्रिये कं वो अधि तनूषु वाशीः hübsch zu schauen
sind an euch die Schwestern 88,3. 4,5,15. 10,5. श्रिये न गाव उप सोम-
मस्थुः 41,8. शुभा व्यञ्जत श्रिये putzen sich hübsch heraus 8,7,25. सम्प-
न्नो ऽस्मा ऽमे लोकाः श्रिये दीयति Ait. Br. 1,8. — b) Wohlgefallen, Be-
friedigung: श्रिये ममांसि देवसौ अक्रन् RV. 6,44,8. उप स्तोमात्तुरस्य
दर्शयः श्रिये 8,26,4. तव श्रिये व्यञ्जिहीत पर्वतः dir zu Gefallen 2,23,18.
वशीनां भवया सकृ श्रिया 3,60,4. मारुतं गुणं संशत श्रिये 1,64,12. 9,104,
1. स्मसि वा संदर्शि श्रिये euch zu Gefallen stehen wir vor euch 5,74,6.
श्रिये ते पञ्चरूपसेवनी भूच्छ्रिये दर्विः 10,103,10. VS. 19,16. TBr. 1,2,
1,26. देवं त्वा देवेभ्यः श्रिया उद्धरामि Āc. Ch. 2,2,2. — c) Wohlfahrt,
Glück, Reichtum; ausgezeichnete Lage und Stellung, Herrlichkeit; =
संपद, संपत्ति, विभूति AK. 2,8,3,50. Trik. H. 357. MEd. = त्रिवर्गसंपत्ति
(nach ÇKDr. zwei Bedd.) H. an. MEd. Viçya a. a. O. = वृद्धि und सिद्धि
Çabdar. im ÇKDr. = अधिकार und कीर्ति Dhār. ebend. = ऐश्वर्य ved.
Comm. श्रीश्च लुप्तमोश्च VS. 31,22. 32,16. श्रियां मा धेहि भूत्याम् AV. 12,
1,63. तत्र, श्री 6,54,1. 7,3,1. 9,5,31. इविषा, श्री 10,6,26. 11,1,12. 21.
श्री, धर्म 12,8,7. सत्य, श्री, यशस् 2. प्रतीच्येषां श्रीरगात् भद्रा भूवा परा
भविष्यति ihr Glück ging rückwärts TBr. 1,1,4,4. Ait. Br. 1,30. 3,7.
5,22. 7,15,17. अदित्य इव श्रियां प्रतिष्ठितस्तपति 34. 8,5,6. 9. 12. TBr.
3,10,6. अथ वा एतस्माच्छ्री राष्ट्रं क्रामति 9,14,1. यो ऽलं श्रिये सन्स-
दङ्गमनैः स्यात् TS. 2,2,8,6. 5,1,8,6. 6,1,10,3. 7,2,3,3. अर्वतिमिव
पुमान्मनपकृत्य श्रियं गच्छति 4,3,1. 4,1. यशस्, अनाथ, श्री Çat. Br. 1,
6,2,8. 2,1,2,7. 2,3,6. 8,6,2,1. 13,1,5,1. 4. 2,6,3. 9,3. श्रीयशसानि
12,8,2,1. पुष्टि, राद्धि, श्री Lāt. 3,11,3. Āc. Ch. 11,4,8. Grh. 1,24,
29. 4,9,4. Kauç. 3. 9. 101. 106. Kaush. Up. 1,5. श्रिया देयम् so v. a. nach
den Vermögensverhältnissen Taitt. Up. 1,11,3. श्रियं प्रत्यक्षुषो भुङ्गे M.
2,52. कर्माण्यारभमाणं हि पुरुषं श्रीर्निषेवते M. 9,300. MBh. 1,7761.
13,309. fg. स्वर्गं विवर्जितम् R. 2,72,3. लभेत वा प्रार्थयिता न वा
श्रियं श्रिया डरापः कथमोप्सितो भवेत् Çak. 62. 91,14. श्रीर्मङ्गलात्प्रभवति
Spr. 5087. न दातुं नोपभोक्तुं वा शक्नोति कृपाः श्रियम् (II) 3282. यदीच्छे-
च्छ्रियमात्मनः 3387. 3562. पञ्च सङ्चारिणः 3758. भाजन 3842. 4978.
Varāh. Brh. S. 43,6. 53,88. 124. Kathās. 18,134. कोशे बद्धा कृता येन
चलापि श्रीर्भुजार्पिता 43,21. पुष्टा M. 4,231. Varāh. Brh. S. 62,1. सुवि-
पुला MBh. 3,2302. = कोश Schatz Bhāg. P. 9,10,17. अर्थ, भोग Kathās.
54,163. एतयोर्निपुणं वेदि नादं भेद श्रियोः 164. शक्रस्य Herrlich-
keit, Majestät Spr. (II) 3589. लोकपालाः लक्षणात्सर्गविनीतवेष्टाः Ku-
māras. 7,45. अमर Varāh. Brh. S. 12,3. die glänzende Stellung und
Macht eines Fürsten: श्री, विजय Bhāg. 18,78. प्रताप MBh. 4,2285.

श्रीश्च राज्ये प्रतिष्ठिता 12,2254. R. 2,21,15. 36,30. 55,16. श्रीश्च तं
वृणुते यमा (personif.) 70,12. 79,15. 84,5. Ragh. 3,36. 8,13. fg. 12,2.
6. 13. 104. 17,46. 18,52 (भुवि). विद्युल्लोका कनकरुचिर्श्रीर्वितानं ममा-
धम् so v. a. königliche Insignien Vikr. 76. परा Spr. (II) 688. 2633. 3399.
5348. 5894. प्रदीप्ता Varāh. Brh. S. 50,23. श्रियो भातः hochangesehene,
vornehme Leute 68,64. मोहान्धमविवेकं हि श्रीश्चिराय न सेवते Kathās.
49,223. Rāga-Tar. 3,126. 4,49. 610. मद 1,354. Bhāg. P. 10,73,20.
बुभुजे च श्रियं स्वहृदाम् 8,15,36. यौवराज्यं Vikr. 161. पुत (मुनीश) alinus
R. Einl. — plur.: श्रियो वै पञ्चन्यो वर्षति Çat. Br. 12,4,4,11. श्रीश्च प्रज्ञा
च विधेहि नः Praçnop. 2,13. श्रियो देवालोलाः Spr. 3035. 5022. (II)
3110. 3698. श्रीणां दानं रसः परः 4049. प्राप्ताः श्रियः 4327. Kathās. 56,
385. अन्त्यनुप 23,70. Am Ende eines adj. comp.: पृथु MBh. 3,2446.
Ragh. 1,93. 2,74. पूर्ण Spr. (II) 2156. श्री sg. und pl. im Wortspiel
mit स्त्री Spr. (II) 313. 4628. 5996. pl. 395. 4200. (I) 5126. — d) personif.
als Göttin der Schönheit, insbes. aber der Wohlfahrt, = लक्ष्मी AK. 1,
1,2,22. Trik. 1,1,41. 3,3,373. H. 226. H. an. MEd. Hār. 224. Halāj.
1,31. Viçya a. a. O. प्रज्ञापतिर्वै प्रज्ञाः सृजमानो ऽतप्यत। तस्माच्छ्रुतात्ते-
पानाच्छ्रीरुद्रक्रामत्सा दीप्यमाना धाजमाना लेलापत्यतिष्ठत् u. s. w. Çat.
Br. 11,4,2,1. fg. उच्छीर्षके श्रिये कुर्यात् (बलिम् M. 3,89. घ्रापतलोचना
MBh. 3,2084. लोककाता 2664. परिचय Spr. 2664. श्रिया लम्पिदणं
संवासः 5085. देवी (II) 3768. विज्ञोर्ललाटात्कमलं सौवर्णमभवत्तदा। श्रीः
संभूता यतो देवी पत्नी धर्मस्य धीमतः ॥ MBh. 12,2252. fg. Hariv. 5419.
6092. fg. 6615. 7740. 9498. तास्त्वां परिचरिष्यति श्रियमप्सरसो यथा
R. 5,22,32. पद्मक्षीनामिव श्रियम् 3,52,22. Ragh. 10,8. परस्परविराधि-
न्योः श्रीरस्वत्योः Spr. (II) 3941. Kathās. 18,204. Rāga-Tar. 3,425.
wohnt auf dem Meru R. 1,1,32 (34 Gorr.). रामलक्ष्मणयोर्मध्ये सीता रा-
जति ते सुषा। विष्णुवासवयोर्मध्ये यमा श्रीरिव इविषी ॥ R. Gorr. 2,60,
13. Kathās. 7,60. कवच Verz. d. Oxf. H. 94,4,42. मन्त्र 93,6,19. 105,
b, 16. fg. entsteht bei der Quirlung des Oceans MBh. 1,1146. 1148.
Hariv. 4603. fg. 12187. R. 1,43,43. VP. 76. fg. Spr. (II) 5897. जल-
धिसुता Dhūrtas. 77,1. देवी श्रीर्नकात्मजा Sītā als Çrī Spr. (II) 2935.
Tochter Bhṛgu's von der Khjāti und Gattin Nārāja's VP. 59. fg.
Mārk. P. 52,15. Bhāg. P. 4,1,43. कामभवननिवासिनी च श्रियं रुदती-
मपश्यत् Lalit. ed. Calc. 378,12. als Mutter des Darpa Mārk. P. 50,
25. Çrī ist Herrin des Karaṇa Vāṇiḡa Varāh. Brh. S. 99,4. श्रियः
पुत्राः heißen Ziegen mit best. guten Merkmalen 65,9. Bed. c) und d)
lassen sich häufig nicht scheiden. — e) am Anfange von Personen-
namen (von Göttern und Menschen), Büchertiteln, Orten u. s. w. als
Ausdruck der hohen Stellung, welche die Personen u. s. w. einnehmen.
देवं गुरुं गुरुस्थानं तत्र तत्राधिदेवताम्। सिद्धं सिद्धाधिकाराश्च श्रीपूर्वं
समुदीरयेत् ॥ Prajogasāra im ÇKDr. राम Weber, Rāmat. Up. 344. fg.
350. 359. रामचन्द्र 345. 350. 354. मल्लि H. 49. द्रव्यवर्धनः (अवति-
को नृपः) Varāh. Brh. S. 86,2. प्रभाकरवर्मन् Rāga-Tar. 3,30. कीर्ति-
वर्मदेव Prab. 2,9. Dhūrtas. 66,16. zwischen dem Personennamen und
चरण, पाद Fuss: भगवद्भिर्नलिकापठभारतीश्वरयोः Sarvadarśanas. 172,
1. 2. — पञ्चरात्र 55,18. पुरी विशाला Megh. 31. काञ्ची Verz. d. Oxf.
H. 221, a, No. 534. — f) am Ende von Personennamen: देव्यः श्रीशब्द-
लाङ्किताः (z. B. सद्भाव) Rāga-Tar. 3,353. Wassiljew 267. — g) =